महिला उद्यमियो की सफल कहानियॉ

वन्दना नौहरिया
सरकारी महाविद्यालय, फरीदाबाद

प्रस्तावना-

आधुनिक युग में हर व्यक्ति अपने लिए उचित अवसरों की तलाश कर रहा है । इस कारण धीरे-धीरे कई प्रकार के उद्योगों की स्थापना पूरे विश्व में हो गई है।दुनिया भर की सरकारें उद्योगों को विकसित करने का प्रयास करती हैं। और उद्यमियों को फलने फूलने के अवसर और चुनौतियां पैदा करती हैं। ताकि यह उद्यमी अपने-अपने राष्ट्रों के सर्वोत्तम हित में प्रगति करें और व्यापारिक दुनिया में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़ाएं। पिछले एक दशक में दुनिया भर में महिला उद्यमियो के महत्व को काफी महसूस किया गया है। महिलाएं पुरुष की तुलना में तेजी से नए व्यवसाय शुरू कर रही हैं। साथ ही पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर विभिन्न व्यवसाय की प्रगति में भी योगदान दे रही हैं। आधुनिक महिला ज्यादा प्रगतिशील है ।और अर्थव्यवस्था में योगदान देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। महिलाएं अपनी विभिन्न प्रबंध शैलियो के माध्यम से अपने स्वयं के व्यवसाय संगठनों में नवाचार, विविधता और विकल्प जोड़ रही हैं। आज महिलाओं को विकास की प्रक्रिया में समान भागीदार के रूप में माना जा रहा है। भारत में आज कई सफल महिला उद्यमी है ।जो हर दिन लाखों महिलाओं को प्रेरित कर रही हैं। एक महिला उद्यमी एक व्यवसाय की स्थापना और संचालन की वित्तीय जोखिम उठाती हैं। वे रचनात्मक, दूरदर्शी होने के साथ-साथ एक रणनीतिज्ञ होती हैं इस शोध पत्र के माध्यम से मैं कुछ ऐसे सफल महिला उद्यमियो के बारे में बताना चाहूंगी ।जिन्होंने डूबते हुए उद्योगों को अपनी दृढ़ता, बुद्धिमानी, प्रबंध शैलियों के माध्यम से नई दिशा दिखाई।

पूर्ण शोध पत्र-

भारतीय महिलाएं जो कभी घर की चार-दिवारी में सिमट कर रहने वाली थी, आज जीवन की सभी क्षेत्र में सफ़लता पाने के नए-नए उदाहरण पेश कर रही हैं। इस शोध पत्र में हम कुछ ऐसी ही विशेष महिलाओं के बारे में जानकरी पेश कर रहे हैं। आज पूरी दुनिया में महिलाएं अपने य़ोग्यता, मेहनत और ताकत का लोहा मनवा चुकी हैं। वैसे तो आज महिलायें जीवन की सभी क्षेत्र में जबरदस्त कामयाबी हासिल कर रही हैं। और अपने परिवार, समाज तथा देश-दुनिया के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। लेकिन, भारत के कॉरपोरेट वर्ल्ड में भी भारतीय महिलाओं ने अपनी काबिलियत और अथक मेहनत के बूते पर अपनी खास पहचान बना ली है। इस शोध पत्र में कुछ ऐसी ही सफल भारतीय महिलाओं के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी पेश है। जिन्होंने कॉरपोरेट जगत को एक नई दिशा प्रदान की है ।और अन्य सभी महिलायें इन सफल महिलाओं से प्रेरणा हासिल कर सकती हैं-:

ISBN: 978-81-955611-2-4

एकता कपूर

शायद ही कोई भारतीय टेलीविजन देखने वाला प्रशंसक होगा जिसने एकता कपूर का नाम नहीं सुना हो। वे एक ऐसी महिला हैं जिन्होंने भारतीय टेलीविजन का चेहरा हमेशा के लिए बदल दिया। अब, भले ही आप उन लोकप्रिय बालाजी धारावाहिकों को देखना पसंद करते हों या नहीं, आप इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं कि ये धारावाहिक लंबे समय तक भारतीय टेलीविजन में दिखाये जाते रहे थे और भारतीय समाज की पहचान बन गये थे। एकता कपूर वे महिला थीं जिन्होंने अकेले ही बालाजी टेलीफ़िल्म्स को स्थापित किया और घर-घर की पहचान बनाया। उन्होंने कई प्रसिद्ध धारावाहिकों का निर्माण किया। भारतीय टेलीविजन के इतिहास में सबसे लंबे समय तक चलने वाले टीवी धारावाहिक और सबसे ज्यादा देखे जाने वाले टीवी धारावाहिक बनाने का श्रेय उन्हें दिया जाता है। भारतीय टेलीविजन उद्योग में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए वर्ष 2006 में उन्हें छठे इंडियन टेली पुरस्कारों में 'हॉल ऑफ फेम' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अपनी कंपनी और ब्रांड के उग्र रक्षक के रूप में उनकी छवि बन चुकी है। एकता अपने गहन व्यवसाय कौशल और व्यावसायिकता के लिए भी प्रसिद्ध हैं।

रिचा कार

रिचा भारत में ऑनलाइन लिंगरी स्टोर, ज़िवामे की संस्थापक और सीईओ हैं। यह कहना बिलकुल गलत नहीं होगा कि उन्होंने सबसे दुस्साहसी तरीके से अपनी सीमाएं तोड़ कर कार्य किया। रिचा ने बिट्स, पिलानी से वर्ष 2002 में अपनी इंजीनियरिंग पूरी की जिसके बाद उन्होंने आईटी उद्योग में कुछ समय तक काम किया। उसके बाद वे वर्ष 2007 में नर्सी मोनजी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज से मैनेजमेंट स्टडीज में पोस्टग्रेजुएशन करने गईं और फिर, जिवामेकॉम की स्थापना करने से पहले उन्होंने एक रिटेलर और ग्लोबल टेक कंपनी के साथ काम किया। यह संभवतः भारत में पहली ऑनलाइन अधोवस्त्र (इनर वियर) कंपनी है और देश भर में महिलाओं को इनर वियर के बारे में शिक्षित करने में भी इस कंपनी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने एक छोटे से कार्यालय से कंपनी की शुरुआत की. लेकिन, केवल 3 साल के भीतर उनकी कंपनी में 200 से ज्यादा कर्मचारी थे और 5,000 से अधिक स्टाइल, 50 ब्रांड्स और 100 साइजेस के साथ ही 100 मिलियन डॉलर की संचित कीमत थी।

कशफ़ शेख

कशफ़ शेख हमारे देश की सबसे आशाजनक उभरती हुई महिला कारोबारियों में से एक हैं। रिचा की तरह ही उन्होंने भी एक ऑफबीट उद्यमिता की शुरुआत की है। कशफ़ एक वेबसाइट की संस्थापक हैं। जिसे 'डीलिवोर' के नाम से जाना जाता है और यह एक प्रामाणिक वेबसाइट है। जहां ऑनलाइन शॉपर्स पूरे देश में कई स्टोर्स के लिए वैध कूपन प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाइन शॉपिंग के किसी भी शौकीन को उनकी वेबसाइट पर अवश्य विजिट करनी चाहिए। डीलिवोर ऑनलाइन डील्स और ऑफ़र्स के लिए एकमात्र सलूशन है। कशफ़ ने पुणे विश्वविद्यालय से कंप्यूटर

ISBN: 978-81-955611-2-4

विज्ञान में ग्रेजुएशन की है। वे मार्केटिंग एंड सेल्स में सलाहकार के रूप में काम कर रही हैं और कम्प्यूटर सोसाइटी ऑफ इंडिया ने उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्रदान किया है। उन्हें डिजिटल मार्केटिंग में गहरी रूचि थी जिसके कारण उन्होंने डीलिवोर कंपनी बनाई। केवल 23 वर्ष की उम्र में एक सफल उद्यमी के तौर पर कशफ़ एक उपयुक्त रोल मॉडल हैं और सभी उभरते हुए कारोबारियों के लिए वे एक महान प्रेरणा हैं।

सुची मुखर्जी

सुची मुखर्जी लाइफ स्टाइल एंड एक्सेसरीज श्रेणी के अंतर्गत लाइम रोड और ई-कॉमर्स वेबसाइट की संस्थापक और सीईओ हैं। सुची लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से अर्थशास्त्र में ग्रेजुएट हैं. उनके पास कई पुरस्कार और पहचान हैं जैसेकि इकोनॉमिक्स में सर्वश्रेष्ठ छात्र के तौर पर के.सी. नाग इकोनॉमिक्स प्राइज, सेंट स्टीफन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में व्यापक योगदान देने के लिए जॉर्ज के. जॉर्ज मेमोरियल स्कॉलरशिप, कैम्ब्रिज कॉमनवेल्थ ट्रस्ट स्कॉलरशिप एंड फैलोशिप, मेरिट के लिए चाडबर्न स्कॉलरशिप, ये दोनों कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी द्वारा दी गईं और ब्रिटिश शेवनिंग स्कॉलरशिप उन्हें लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में प्रदान की गई। उन्हें राइजिंग प्रतिभायें, '40 वर्ष से कम आयु के उच्च क्षमता वाले लीडर्स' के लिए दुनिया भर में 15 महिलाओं में से 1 के रूप में चुना गया. उनकी कंपनी ने लाइट स्पीड वेंचर पार्टनर, मैट्रिक्स पार्टनर्स और टाइगर ग्लोबल से 20 मिलियन डॉलर का फंड एकत्रित किया है. सुची ने पहले लीमैन ब्रदर्स इंक, वर्जिन मीडिया, ईबे इंक, स्काइप और गमट्री जैसी कई प्रसिद्ध कंपनियों में काम किया था, जहां वे 2 से अधिक वर्षों के लिए प्रबंध निदेशक के पद पर कार्यरत थीं।

मालविका हेगड़े-

Café Coffee Day कंपनी की खस्ता हालत से परेशान होकर वीजी सिद्धार्थ ने जान दी थी। उनकी पत्नी ने CCD को फिर से खड़ाकर दिखा दिया कि कुछ भी मुमकिन है।कैफे कॉफी डे (CCD) इंटरप्राइजेज लिमिटेड की सीईओ मालविका हेगड़े चर्चा में हैं। वजह है बतौर सीईओ उनके काम। निराशा और कर्ज़ में डूबी एक कंपनी को उन्होंने फिर से खड़ा करके दिखा दिया है।

साल 2019 में जब मालविका ने कमान संभाली, तब उनके सामने चार चुनौतियां थीं। पति वीजी सिद्धार्थ की मौत से उबरना, परिवार को संभालना, कंपनी को कर्ज़ से उबारना और काम करने वाले हज़ारों कर्मचारियों के रोज़गार को बचाना। देश के सबसे बड़े कॉफी ब्रैंड और कॉफी शॉप चेन के मालिक वीजी सिद्धार्थ ने आत्महत्या की थी। उस समय कंपनी पर करीब 7000 करोड़ रुपये का कर्ज़ था।

ऐसे मुश्किल वक़्त में भी मालविका टूटी नहीं, बल्कि ख़ुद को मजबूत किया। संकल्प लिया कि इन चुनौतियों को मुक़ाबला करेंगी। उन्होंने परिवार के साथ कंपनी का नेतृत्व करने का फैसला किया। कर्मचारियों से बात करके कंपनी के ऑपरेशन सिस्टम को मजबूत करने की शुरुआत की उन्होंने। मार्केट ने भी मालविका की इस पहल का स्वागत किया। कर्मचारियों और कंज्यूमर्स का साथ मिला। इसके बाद से आज तक का जो सफर मालविका ने तय किया है, वह भारत के कॉरपोरेट सेक्टर में एक नया अध्याय लिख गया।

सीसीडी पर साल 2019 में 7000 करोड़ रुपये का कर्ज़ था, वह मार्च 2021 तक घटकर 1,779 करोड़ रुपये रह गया। धीरे-धीरे कंपनी की वित्तीय हालत सुधर रही है। कोरोना का प्रभाव जैसे-जैसे कम होगा, इसमें और सुधार होना तय है। मौजूदा समय में सीसीडी भारत के 165 शहरों में 572 कैफे संचालित कर रहा है। 36,326 वेंडिंग

ISBN: 978-81-955611-2-4

मशीन के साथ सीसीडी देश का सबसे बड़ा कॉफी सर्विस ब्रैंड है। निश्चित तौर पर मालविका ने उन महिलाओं के लिए एक मिसाल कायम की है, जो जीवन में चुनौतियां आने पर टूट जाती हैं, पति की मौत पर ख़ुद को अकेला पाकर दुनिया का सामना करने से कतराती हैं। मालविका ने यह साबित कर दिया है कि अगर आपके पास दृढ़ इच्छा शक्ति है और आपकी प्लानिंग बेहतर है, तो किसी भी चुनौती का सामना कर आगे बढ़ा जा सकता है।

किरण मजूमदार-शॉ-

किरण मजूमदार-शॉ एक भारतीय उद्यमी और आईआईएम-बैंगलोर की अध्यक्ष हैं, बायोटेक्नोलॉजी कंपनी बायोकॉन लिमिटेड की चेयरमैन और प्रबंध निदेशक हैं। 2014 में, उन्हें विज्ञान और रसायन विज्ञान की प्रगति में उत्कृष्ट योगदान के लिए ओथम गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। वह फाइनेंशियल टाइम्स की शीर्ष 50 महिलाओं की व्यवसाय सूची में हैं। 2015 तक, उन्हें फोर्ब्स द्वारा दुनिया की 85 वीं सबसे शक्तिशाली महिला के रूप में सूचीबद्ध किया गया था । 2016 में, वह "फोर्ब्स" में एक और बार सूचीबद्ध हो चुकी है दुनिया की सबसे शक्तिशाली महिला के रुप में 77 वें स्थान पर है।

इंद्रा नूई-

भारतीय मूल की अमेरिकी इंद्रा नूई कोई अनजान शख्सियत नहीं हैं। जब भी पावरफुल और कामयाब महिलाओं की बात चलती है तो इंद्रा नूई का नाम भी सामने आता है। वह पेप्सिको की अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी रह चुकी हैं। साल 2018 में नूई पेप्सिको के सीईओ के पद से रिटायर हुईं। वह 2007 से 2019 तक पेप्सिको की अध्यक्ष रहीं। इंद्रा नूई को यह कामयाबी यूं ही नहीं मिल गई। इस कामयाबी के पीछे है उनकी कड़ी मेहनत और **लगन।**

इंद्रा नूई ने अपनी पूरी जिंदगी को 300 पन्नों की एक किताब में समेटा है। इस किताब का नाम है 'माई लाइफ इन फुल: वर्क, फैमिली एंड अवर फ्यूचर"। नूई की यह किताब एक संस्मरण है, जिसमें उन्होंने बाल्यकाल से लेकर पेप्सिको की मुख्य कार्यकारी अधिकारी बनने तक की उन घटनाओं का ब्योरा दिया है।

नूई साल 1994 में पेप्सिको कंपनी के साथ कॉरपोरेट स्ट्रैटेजी व डेवलपमेंट की सीनियर वाइस प्रेसिडेंट के तौर पर जुड़ीं। जब उन्होंने पेप्सिको को जॉइन किया, उस वक्त अमेरिका की 500 सबसे बड़ी कंपनियों में से एक में भी महिला सीईओ नहीं थी। साल 2001 में उन्हें कंपनी का सीएफओ बनाया गया और पांच साल बाद यानी 2006 में वह कंपनी की चेयरमैन व सीईओ बन गईं। 2006 में अमेरिका में 11 महिला सीईओ थीं। इंद्रा नूई पेप्सिको की 5वीं और पहली महिला सीईओ थीं। साथ ही एक फॉर्च्यून 50 कंपनी चलाने वाली पहली अश्वेत और अप्रवासी महिला थीं।इंद्रा नई दुनिया की बेहतरीन सीईओ में गिनी जाती हैं। नूई की लीडरशिप में पेप्सिको का रेवेन्यु साल 2006 के 35 अरब डॉलर से बढ़कर साल 2017 में 63.5 अरब डॉलर हो गया। पेप्सिको को आगे ले जाने की इंदिरा नूई की लगभग सभी रणनीतियां सफल रहीं। वह पेप्सिको की दीर्धकालिक विकास रणनीति की शिल्पकार मानी जाती हैं, जिसके अंतर्गत उन्होने एक दशक से अधिक समय तक कंपनी की वैश्विक रणनीति का निर्देशन किया है। इंद्रा ने पेप्सिको के पुनर्गठन का भी नेतृत्व किया, जिसमें ट्रोपिकाना (1998) का अधिग्रहण और क्वेकर ओट्स कंपनी का विलय (2001) शामिल हैं।नूई को कई सारी पत्रिकाओं की प्रभावशाली लोगों की लिस्ट में शामिल किया जा चुका है। 2014 में फोर्ब्स की विश्व की 100 सबसे शक्तिशाली महिलाओं की लिस्ट में नूई को 13वां स्थान मिला था।

ISBN: 978-81-955611-2-4

साल 2015 में फॉर्च्यून ने सबसे शक्तिशाली महिलाओं की लिस्ट में नूई को दूसरी सबसे शक्तिशाली महिला का स्थान दिया था। भारत सरकार की ओर से नूई को साल 2007 में पद्म भूषण पुरस्कार से नवाजा जा चुका है। 2018 में उन्हें CEOWORLD पत्रिका द्वारा दुनिया के सर्वश्रेष्ठ सीईओ में से एक के रूप में नामित किया गया था। उनका नाम दो बार TIME मैगजीन की 'दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची' में भी आ चुका है। फोर्ब्स के मुताबिक, अप्रैल 2021 तक नूई की नेटवर्थ 29 करोड़ डॉलर थी। नूई ने साल 2019 में ऐमजॉन के बोर्ड को जॉइन किया था।

यह सफल महिला कारोबारियों की सूची है। इस सूची में जीवन के सभी क्षेत्रों से महिलायें शामिल हैं। ऐसी महिलाएं, जिन्होंने कॉरपोरेट उद्योग में वर्षों बिताए हैं या फिर, ऐसी महिलाएं जिन्होंने कॉर्पोरेट जगत में नयी शुरुआत की और अपनी काबिलियत एवं मेहनत के बूते पर सफलता प्राप्त की। आशा है कि इन महिलाओं के प्रेरक प्रसंग आपको अपने उद्यमशीलता के सपने साकार करने हेतु कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करेंगे। सफलता की राह आसान नहीं है,बस अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए पहला कदम उठाने की आवश्यकता है।

References:

1. https://www.jagranjosh.com/articles/10-most-successful-female-entrepreneurs-in-india-1520423806-2
2. https://navbharattimes.indiatimes.com/navbharatgold/breaking-news-in-hindi/how-malavika-hegde-ceo-of-cafe-coffee-day-cleared-the-companys-debt/story/88856675.cms
3. https://navbharattimes.indiatimes.com/business/business-news/success-story-indra-nooyi-a-girl-from-madras-who-led-pepsico-to-the-new-heights/articleshow/86589119.cms?story=1
4. https://www.amarujala.com/wiki/kiran-mazumdar-shaw

ISBN: 978-81-955611-2-4